International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(4): 162-163

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(4): 162-163
© 2017
www.anantaajournal.com
Received: 29-05-2017
Accepted: 30-06-2017

डॉ0 मीनेश जैन
असिस्टेंन्ट प्रॉफेसर, संस्कृत विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राज0), भारत

Correspondence
डॉ0 मीनेश जैन
असिस्टेंन्ट प्रॉफेसर, संस्कृत विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राज0), भारत

पं. त्रिगुणानन्द शुक्ल प्रणीत ''श्रीसुभाषचरितम्'' महाकाव्य में वर्णित लोकतन्त्र के सम्बन्ध में सुभाष का दृष्टिकोण

डॉ0 मीनेश जैन

प्रस्तावना

आधुनिक संस्कृत वाङ्.मय के क्षेत्र में 'श्रीसुभाषचरितम्' पं0 त्रिगुणानन्द शुक्ल प्रणीत एक आधुनिक महाकाव्य है। इस काव्य की कथावस्तु का मूलाधार युगप्रधान 'श्री सुभाष चन्द्र बोस' की जीवन गाथा है। 15 सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में कविवर शुक्ल ने सुभाष चन्द्र बोस के जीवन चरित व उनके वीरतापूर्ण क्रिया कलापों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। इस महाकाव्य में वर्णित लोकतन्त्र के सम्बन्ध में सुभाष का दृष्टिकोण इस प्रकार है।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक सुभाष चन्द्र बोस युगदृष्टा, महान् विचारक और राजनीतिज्ञ थे। अपने छात्र जीवन से ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ उन्होंने प्रतिरोध का स्वर बुलन्द किया। छात्र जीवन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी और जेल गये। उसके बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लन्दन गये जहाँ से वे आई.सी.एस.बनकर आए। लेकिन आइ.सी.एस. की नौकरी से त्यागपत्र देकर वे जल्दी ही भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े–

गतो विदेशं पठनाय सज्जितः परिश्रमश्चातिकृतो महात्मना।
फलं परीक्षाजनकं सुखावहं समादरस्तेन समादृतस्तु नो।। [1]

सुभाष चन्द्र बोस का मानना था कि भारत को आजाद कराने के लिए अपने देश के मजदूरों और किसानों में राष्ट्रीय चेतना का प्रचार–प्रसार आवश्यक है। देश के नवयुवकों में जिस तरह का जोश है उसका प्रयोग भारत वर्ष को आजाद कराने के लिए किया जाना चाहिए। [2] आजादी के बगैर मूल्यों की बात करना बेमानी है। सुभाश चन्द्र बोस ने आजादी को प्राप्त करने के लिए राजनैतिक क्षेत्र में जिस मंच का प्रयोग किया वह कांग्रेस थी।

सुभाष का प्रभावशाली व्यक्तित्व और काम करने की ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उनके नेतृत्व को अनिवार्य बनाया। सुभाष जिस स्प्रीड के साथ काम कर रहे थे उससे कांग्रेस पार्टी में उनके विरोधी भी बढ़ते जा रहे थे। जब सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष चुने जा रहे थे तब गाँधी जी ने उसका भरसक विरोध किया और सुभाष को कांग्रेस पार्टी और भारतीय लोकतन्त्र दोनों के लिए खतरा बताया। क्योंकि गाँधी जी जिस मन्थर गति के साथ आजादी के आन्दोलन को आगे बढ़ा रहे थे वह सुभाष जैसे गरमपंथी नेता को किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं था। सुभाष स्पष्ट रूप से संघर्श करते हुए आजादी को प्राप्त करना चाहते थे न कि अंग्रेज सरकार के रहमोकरम से आजादी भीख में लेना चाहते थे। ऐसे में सुभाष के लिए संघर्श आजादी के लिए अनिवार्य शर्त थी। जहाँ वे किसी तरह का कोई समझौता करने को तैयार नहीं थे–

स नैव संघीयविधानपोशकः सुगुप्तदोशं हि विचार्य सर्वथा।
अथो विरोधं कृतवान् स्वसंगिभिर्बहिश्चकाराथ विधानरूपकम्।। [3]

सुभाष चन्द्र बोस कोई क्षणिक परिवर्तनवादी नेता नहीं थे। वे आजादी प्राप्त करने का रास्ता और आजादी प्राप्त कर उसके बाद एक महान राष्ट्र–निर्माण करने का एक विराट स्वप्न रखते थे। उनका आजाद राष्ट्र अमीरों का राष्ट्र नहीं था बल्कि एक ऐसा राष्ट्र था जहाँ सबको बराबर के अधिकार, लोकतान्त्रिक अधिकार और जिसमें जिस तरह की योग्यता है उसका प्रयोग बेहतर भारत के निर्माण में करने का सम्पूर्ण स्वप्न था।

ऐसे में सिर्फ कांग्रेस पार्टी या कि कम्युनिस्ट पार्टी के पास जिस तरह का आजादी को प्राप्त करने का रास्ता था सुभाष का रास्ता वहाँ कहीं भी किसी भी दृष्टि से कमजोर नहीं था–

> सुभाषस्तु सर्वं विचार्य ह्यवोचत् वयं सर्वथा शान्तिमार्गेण नैव।
> समर्था भवेम स्वयं युद्धकार्ये शठे शाठ्यभावो भविष्यत्यवश्यम्।। [4]

सुभाष चन्द्र बोस जिस प्रान्त के थे वहाँ का इतिहास बहुत ही समृद्ध परम्परा लिए हुए है। सुभाष ने नवजागरण और आधुनिकता बोध को परम्परा के आलोक में आत्मसात किया और उसी का प्रयोग वे आजादी के संघर्ष में करना चाहते थे। उनके लिए लोकतान्त्रिक व्यवस्था न तो वोटों की राजनीति थी और न ही सिर्फ सत्ता प्राप्त करना। उनके लिए लोकतन्त्र जन–जन तक पहुँचने वाली लोककल्याणकारी व्यवस्था का नाम था। जिसमें जनता और नेता के जीवन में किसी प्रकार का कोई फक्र नहीं था–

> सुबुद्धिप्रभावात्सदा नेतृवर्गः समाजस्य देशस्यास सेवारतः स्यात्।
> परित्यज्य सर्वप्रकारेण वैरं परेषां जनानां प्रियः स्यादवश्यम्।। [5]

जिस लोकतन्त्र का स्वप्न सुभाष देखते रहे उनके विरोधियों ने उसको उग्र राष्ट्रवाद का नाम भी दिया और सुभाष चन्द्र बोस को हिटलर से मिलने के कारण तानाशाह के रूप में व्याख्यायित करने का पुरजोर प्रयास किया। लेकिन सुभाष ने कभी भी अपने मूल्यों से समझौता नहीं किया और अपने संघर्ष से कभी भी पीछे नहीं मुड़े। ऐसे में सुभाष को एक सच्चे लोकतन्त्र के निर्माण का स्वप्न देखने वाले महान् नेता के रूप में याद किया जाना चाहिए न कि फौरी तौर पर लिया जाना चाहिए।

यह इस लोकतन्त्र का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि सुभाष जैसे महान् नेता असमय ही इस दुनियां से चले गये। शायद वह जिन्दा होते तो आज भारतीय लोकतन्त्र का नक्शा हमारी आँखों के सामने वह नहीं होता, जिसमें लोकतान्त्रिक मूल्यों की सिर्फ बातें ही नहीं की जाती बल्कि उनकी व्यावहारिकता ही उनकी लोकतान्त्रिक व्यवस्था की सच्ची व्यावहारिकता होती–

> सुभाषो ह्यतिश्ठत् स्वदेशेऽधुना चेत् तदा तस्य रूपे न तादृग् विकारः।
> समाजस्य जातोऽभवत्क्वापि तत्र अभावोऽधुना तस्य कष्टप्रदोऽस्ति।। [6]

उपसंहार–राजनीतिक सन्दर्भ में सुभाष चन्द्र बोस का स्पष्ट मानना था कि अंग्रेज अपनी मर्जी से कभी भी इस देश की शासन व्यवस्था हमारे हाथों में सोंपकर नहीं जायेंगे। ऐसे में अगर इस देश के नेता इस विचार के साथ इस देश की जनता को भ्रम में रखते हैं तो वह बहुत बड़ी बेईमानी है। क्योंकि जिस ब्रिटिश साम्राज्य को यहाँ शासन करते हुए इतना फायदा हो रहा हो, वह भला इस देश को सिर्फ कुछ लोगों के कहने पर ऐसे ही छोड़कर क्यों जायेगा? सुभाष का संघर्ष केवल ब्रिटिश शासकों से ही नहीं था बल्कि उनका संघर्ष भारतीय राजनीतिज्ञों से भी था। यही यर्थाथवाद उन्हें विदेश में जाने के लिए विवश करता है। द्वितीय विश्व युद्ध की पराकाष्ठा को सुभाष ने समझा, इसलिए सुभाष चन्द्र बोस ने इस देश की आजादी को प्राप्त करने के लिए सैनिक शक्ति का प्रयोग करने का रास्ता सुझाया और वही रास्ता अन्तिम रास्ता है,

सन्दर्भ

1. श्रीसुभाषचरितम्–2/25, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, नई दिल्ली।
2. विशालरूपे तरुणः समाजो नैराश्यभावं सकलं विहाय।
   स्थितो बभूव प्रबलप्रकोपे नेत्रा समुत्साहमवाप्य भूयः।।
   श्रीसुभाषचरितम् 3/33
3. श्रीसुभाषचरितम्–2/53
4. श्रीसुभाषचरितम्–4/18
5. श्रीसुभाषचरितम्–15/33
6. श्रीसुभाषचरितम्–15/29